अप्रैल 2019 वर्ष : 2 अंक :7

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

आप सभी को नए वित्तीय वर्ष 2019-20 के शुभागमन पर हार्दिक बधाईयाँ। संस्थान में हो रहे विकास एवं विज्ञान के प्रचार-प्रसार कार्यो हेतु हमने पिछले वर्ष के दौरान अपना वित्तीय लक्ष्य समय रहते प्राप्त कर लिया। जिसके लिए संस्थान में कार्यरत प्रशासनिक और वित्तीय कर्मचारियों का धन्यवाद देता हूँ जिनके परिश्रम से यह पूर्ण हो पाया है। हमेशा की तरह संस्थान की मासिक गतिविधियों और आगामी परियोजनाओं की बुनियादी शुरुआत की संक्षिप्त जानकारी लेकर, आपके समक्ष यह अंक प्रस्तुत करने जा रहा हुँ। विगत महीनें में संस्थान में कई मुख्य कार्यक्रम हुए जिनको बड़े स्तर पर आयोजित किया गया ताकि मत्स्य कृषको और हितधारको को यह संस्थान उचित मार्गदर्शन देकर उनकी आय में वृद्धि के नए रास्ते दिखा सके। इसी क्रम में संस्थान ने दो विशेष कार्यशालाओं - 'जीविकोपार्जन में अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी की भूमिका' और 'अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव' का आयोजन किया। इसके अलावा मत्स्य समृद्धि मेला और अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस द्वारा भी मात्स्यिकी और उसके उत्थान में मत्स्य कृषको और महिलाओं के योगदान को महत्वपूर्ण तरीके से सबके सामने रखा गया। मत्स्य समृद्धि मेले के आयोजन के दौरान वैज्ञानिको, कृषको, हितधारको, छात्रों एवं स्वयं सेवी संस्थानों को एक मंच देकर संस्थान ने उनके आपसी जोड़ को मजबूती देने का सफलतम प्रयास किया है। संस्थान में कार्यरत महिला कर्मियों को उनके दैनिक कार्यालय सम्बन्धी कार्य के अलावा संस्थान में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन किया गया है ताकि निर्णय निर्धारण में उनकी सक्रीय भूमिका रहे और कार्यक्षमता में दक्ष अन्य महिला कर्मियों के लिए कार्यालय वातावरण को ओर बेहतरीन बनाने हेतु किये गए प्रयासों को भी इस अंक में स्थान दिया गया है। संस्थान के 73 वें स्थापना दिवस के मौके पर हमने इससे जुड़े सभी वैज्ञानिको और कर्मचारियों को ससम्मान आमंत्रित किया और उनके विचारों और अनुभवों से लाभ प्राप्त किया। हम अपने इस संस्थान की गरिमा, ऐतिहासिक उपलब्धि और वर्तमान उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए हमेशा प्रयासरत रहेंगे। इसी संक्षिप्त भूमिका के साथ आपके समक्ष इस अंक की प्रति को आपके लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ।

विकेश

मुख्य शोध उपलब्धियां

- ओडिशा के सलिया जलाशय में स्थापित पिंजरों में *पंगासियनोडोन हाइपोफथाल्मस* और *बारबोनिमस गोनियोनोटस* का मानकीकृत, बहु-मत्स्य पालन तकनीक द्वारा किया गया। इन प्रजातियों को 8:2 के संचयन घनत्व पर (पी. *हाइपोफथाल्मस* : बी. *गोनियनोटस*) 50 अंगुलिका प्रति घन मीटर के हिसाब से पिंजरों में रखा गया जिससे जलाशय में बेहतर वृद्धि-अनुपात और पिंजरा पालन में प्रयोग होने वाले खाद्य पदार्थ को भी अनुकूलित किया जा सके।

- पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद और कूचबिहार जिलों के चयनित बाढ़कृत आद्रक्षेत्रो से मछली की पैदावार, क्रमशः 350 और 720 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर दर्ज की गयी जबकि इनकी उत्पादन क्षमता लगभग 1500-2500 किलोग्राम/ हेक्टेयर/वर्ष तक रहती है। इससे यह पता चलता है कि इन जल निकायों में पालन आधारित मात्स्यिकी से मछली उत्पादन में वृद्धि संभव है।

- भोमरा बील में पादप-प्लवक (अति-सूक्ष्म और सूक्ष्म प्रकार) के विभिन्न आकार समूहों में अस्थायी विषमता पाई गयी जिससे यह पता चला कि मानसून के समय अति-सूक्ष्म और सूक्ष्म पादप प्लवकों का आकार तुलनात्मक तौर पर कम रहता है ।

- शीतकाल में एकत्रित नमूनो से पता चला है कि गंगा नदी के हर्षिल से वाराणसी क्षेत्र तक 9 नमूना स्थलों पर 6 गैस्ट्रोप्रोड, 6 कीड़े, 4 बाइवलेव और 2 एनेलिड सहित कुल 18 मैक्रो-बेंथिक प्रजातियाँ पायी जाती है। इनकी बहुतायता 40 से 390 यूनिट प्रति वर्ग मीटर के बीच पायी गयी।

- आजीविका सुरक्षा सूचकांक (LSI) विश्लेषण यह बताते हैं कि झारखंड के जलाशयों में पिंजरा पालन और अन्य मछुआरों का आजीविका सुरक्षा सूचकांक क्रमशः 42.06 और 36.63 प्रतिशत (जो 1-100 के पैमाने पर आँका गया और 100 मान को सर्वश्रेष्ठ माना गया) पाया गया। यह देखा गया कि अधिकांशतः सामान्य मछुआरे (63%) निम्न आजीविका सुरक्षा श्रेणी में पाये गए जबकि उनके समकक्ष पिंजरा पालन से सम्बंधित मछुआरे मध्यम आजीविका सुरक्षा श्रेणी के अंतर्गत दर्ज किए गए। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मछुआरों की आजीविका बढ़ाने में पिंजरे में मछली पालन का विशेष महत्व है।

महत्वपूर्ण चर्चाएं

- संस्थान के मुख्यालय में दिनांक 4 मार्च 2019 को ओडिशा और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए बीओबीएलएमई (BOBLME) रणनीतिक कार्रवाई कार्यक्रम (स्ट्रेटेजिक एक्शन प्रोग्राम यानि एसएपी) के परियोजना प्रलेख के निर्माण पर चौथी हितधारक परामर्श बैठक आयोजित की गयी।

- संस्थान के इलाहाबाद केंद्र में दिनांक 26 फरवरी 2019 को राजभाषा (हिन्दी) कार्यो पर संसदीय समिति ने संस्थान के कार्यकलापों की समीक्षा बैठक की ।

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 1 मार्च 2019 को मत्स्य विभाग, ओडिशा सरकार के निदेशक के साथ परस्पर सहयोगी परियोजना पर चर्चा में भाग लिया।

- संस्थान ने दिनांक 2 मार्च 2019 को भाकृअनुप- राष्ट्रीय संस्थान प्राकृतिक तंतु अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी, कोलकाता में आयोजित बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) नैदानिक कार्यशाला में भाग लिया।

- संस्थान ने दिनांक 07-09 मार्च, 2019 को वर्दवान विश्वविद्यालय में "फ्रंटियर इन बायोलॉजिकल, एनवायरनमेंटल एंड मेडिकल साइंस (जैविक, पर्यावरण और चिकित्सा विज्ञान में मुख्य लक्ष्य) " पर दूसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र वडोदरा द्वारा एनएफडीबी प्रायोजित 'मछुआरों की आय दुगुनी करने के लिए संलग्नक पालन' पर कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र ने राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (एनएफडीबी), हैदराबाद द्वारा प्रायोजित तीन दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन 28 फरवरी से 2 मार्च 2019 के दौरान "मछुआरों की आय दुगुनी करने के लिए संलग्नक पालन" विषय पर एपीएमसी हॉल, वडोदरा में किया। यह कौशल विकास कार्यक्रम कई विकसित प्रौद्योगिकियों जैसे अंतर्स्थलीय खुले पानी से मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए पिंजरे और पेन (घेरा) पालन का विस्तार का अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन में योगदान देखकर तैयार किया गया था । कार्यक्रम में गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के विभिन्न जिलों के पचास किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह के दौरान डॉ. एस.पी. कांबले, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र वडोदरा के वैज्ञानिक-प्रभारी, ने अपने स्वागत भाषण में देश में मछली उत्पादन का मुद्दा और पिंजरे की पालन पद्धति के महत्व को अनपेक्षित क्षमता के उपयोग के लिए उठाया ताकि मछली उत्पादन को बढ़ाने के लिए विभिन्न जलाशयों का उपयोग किया जा सके और मछुआरों की

आय को दोगुना किया जा सके । डॉ. सी. के. मिश्रा, वरिष्ट वैज्ञानिक, भाकृअनुप- केन्द्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, आनंद, ने इस अवसर पर उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में कहा की भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने इस तरह के विषय पर इस कार्यक्रम की रूपरेखा को तैयार करना और उसको कार्यान्वित करना अपने आप में एक प्रशंसनीय कदम है, जो

आज के समय की आवश्यकता भी है। श्री एच. वी. मेहता, पुलिस अधीक्षक, राजपीपला, ने प्रतिभागीओं को सरकारी योजनायों और गुजरात में पिंजरे पालन के लिए उपलब्ध सब्सिडी के बारे में बताया। डॉ. दिबाकर भक्त, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र वड़ोदरा, के वैज्ञानिक ने मध्यम और बड़े जलाशय (2.55 लाख हेक्टेयर), नदियों और नहरों (3865 कि.मी.) और नदी के मुहाने (0.21 लाख हेक्टेयर) के रूप में गुजरात

राज्य के संभावित अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों पर प्रकाश डाला और उन संसाधनों में मछली उत्पादन और उनकी उत्पादकता को बढ़ाने के लिए संलग्नक पालन पद्धति के महत्व की जानकारियां दी। उन्होंने एक स्थायी तरीके से राज्य के अंतर्स्थलीय जल उत्पादन को बढ़ाने के लिए पिंजरे और पेन (घेरा) पालन पद्धति के माध्यम से संचयन सामग्री के इन-सीटू पालन पद्धति पर जोर दिया। अंत में भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र वडोदरा के वैज्ञानिक श्री डब्ल्यू. ए. मयती ने इस अवसर पर धन्यवाद प्रस्ताव दिया। कर्जन जलाशय में पालन पद्धति स्थलों पर व्याख्यान और क्षेत्र की यात्रा के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम तीन दिनों तक जारी रहा। श्री डब्ल्यू. ए. मयती, वैशाख जी., दिबाकर भक्त और एस.पी. कांबले ने अंतर्स्थलीय खुले पानी में विभिन्न फिन और शेलफिश प्रजातियों के प्रबंधन और बाड़े में पर्यावरण और मछली स्वास्थ्य प्रबंधन पालन पद्धतियों (पिंजरे पालन और पेन पालन) जैसे विभिन्न पहलुओं पर इन सत्रों के दौरान प्रतिभागीओं के साथ विचार विमर्श किया । तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागीओं ने वैज्ञानिकों से आशा रखी की भविष्य में इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक दिनों तक किया जायेगा ताकि वे अंतर्स्थलीय खुले पानी में मत्स्य पालन के क्षेत्र में अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकें। प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफल समापन समारोह के दौरान प्रशिक्षण प्रमाण पत्र का वितरण किया गया,

जिसके बाद भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र वडोदरा के वैज्ञानिक श्री वैशाख जी. ने धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ. बी. के. दास, पाठ्यक्रम निदेशक और निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने इस कार्यक्रम के प्रायोजक राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड, हैदराबाद के साथ-साथ सभी संसाधन व्यक्तियों, प्रतिनिधियों और सक्रिय मछुआरों को विशेष धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम में दिए हुए सभी सुझावो और प्रोत्साहनो को सहर्ष स्वीकार करने का आश्वासन दिया।

बंगाल की खाड़ी में बड़ी समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र परियोजना की चौथी हितधारक परामर्श मीटिंग

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 4 मार्च 2019 को ओडिशा और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए बीओबीएलएमई

एसएपी परियोजना के लिए दस्तावेज़ की तैयारी करने के लिए चौथी हितधारक परामर्श मीटिंग की मेजबानी की। यह परामर्श मीटिंग सरकारी संगठन (बीओबीपी-आईजीओ) और संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ), बंगाल की खाड़ी द्वारा सह-आयोजित की गयी थी। परामर्श मीटिंग का व्यापक उद्देश्य था - बंगाल की खाड़ी के बड़े समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र कार्यक्रम चरण-2 (बीओबीएलएमई-2) की सामरिक कार्य योजना (एसएपी) और परियोजना रूपरेखा दस्तावेज (पीएफडी) के अंतर्गत स्थानीय प्राथमिकताओं की पहचान करना था; एसएपी के विषयगत क्षेत्रों पर विशिष्ट जानकारी जुटाना; एसएपी के कार्यान्वयन के लिए सहयोग और समन्वय के दायरे का पता लगाना; और एसएपी के कार्यान्वयन के लिए सह-वित्त की संभावना तलाशना था। परामर्श मीटिंग के आयोजन के दौरान भाकृअनुप-केन्द्रीय

अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. बी. के. दास ने टिप्पणी की कि परामर्श मीटिंग एक महत्वपूर्ण मोड़ पर आयोजित की जा रही है जब मत्स्य पालन और पर्यावरण दोनों कई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि बीओबीएलएमई कार्यक्रम भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में उपलब्ध विशेषज्ञता और ज्ञान पर आधारित होगा और अपने उद्देश्यों को पूरा करने में संस्थान के साथ सक्रिय रूप से सहयोग करेगा। बीओबीपी-आईजीओ के निदेशक डॉ. युगराज सिंह यादव ने कहा कि केन्द्रीय

अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और बीओबीएलएमई ने इसके पहले चरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और संस्थान को दूसरे चरण के दौरान विशेष रूप से जानी पहचानी मत्स्य प्रजातियों जैसे हिल्सा के प्रबंधन, आस्थावानों के स्वास्थ्य का रखरखाव, आजीविका, जलवायु परिवर्तन आदि में एक बड़ी भूमिका निभानी होगी । श्री सी.एम. मुरलीधरन, सलाहकार, एफएओ ने बीओबीएलएमई परियोजना के पहले चरण के दौरान की गई गतिविधियों, विशेष रूप से भारत से संबंधित गतिविधियों के बारे में बताया। डॉ. ई. विवेकानंदन, मत्स्य सलाहकार, बीओबीपी-आईजीओ ने बीओबीएलएमई कार्यक्रम के एसएपी चरण के तहत प्रस्तावित गतिविधियों के बारे में बताया।

तकनीकी प्रस्तुतियों के बाद प्रतिभागियों को कुछ समूहों में एकत्रित किया गया जिसका उद्देश्य था - मत्स्य पालन और पर्यावरण और मौजूदा नीतियों पर इनपुट, मौजूदा नीतियों के कार्यान्वयन में सुधार के लिए आवश्यक उपाय और नीति अंतराल और ओडिशा और पश्चिम बंगाल राज्यों में बीओबीएलएमई कार्यक्रम के साथ सहयोग का दायरा पता करना। सरकारी एजेंसियों का प्रतिनिधित्व करने वाले पच्चीस प्रतिभागी जिसमे शिक्षा, इस संस्थान, और अन्य मात्स्यिकी के संस्थान, सुंदरबन के एनजीओ, सीबीओ से सम्बंधित और अनेक मछुआरों ने परामर्श मीटिंग में भाग लिया।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 8 मार्च 2019 को बैरकपुर स्थित मुख्यालय में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। इस दिवस की शुरुआत माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी

के राष्ट्रीय टेलीविजन पर प्रसारित भाषण से हुई। संस्थान के सभागार में प्रस्तुत इस भाषण में संस्थान के सभी कर्मचारिओ ने भाग लिया और प्रधानमंत्री जी के विचारों को सुना। संस्थान के निदेशक डॉ. बी. के.

दास ने संस्थान की सभी महिला कर्मचारियों को पुष्प और शुभकामनाएं देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर 'कार्यालय एवं समाज में

महिलाओं की स्थिति और भूमिका' पर एक संक्षिप्त बुद्धिशीलता सत्र भी आयोजित किया गया । डॉ. सुहृता चक्रवर्ती, प्रोफेसर, बी. सी. के. वी. को इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में निमंत्रित किया गया था । उन्होंने अपने वक्तव्य में महिला सशक्तिकरण और लैंगिक अवधारणाओं

पर अपने विचार रखे । संस्थान के निदेशक डॉ. बी. के. दास ने सभी कर्मचारियों को संबोधित किया और देश में विज्ञान और शिक्षा प्रणाली को मजबूत करने में महिलाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर अनेक महिला सहकर्मियों ने अपने विचार रखे। इस कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव रखा गया और सभी कर्मचारियों ने इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम और फूड कोर्ट में व्यंजनों का आनंद लिया।

राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (एनएफडीबी), हैदराबाद द्वारा प्रायोजित कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन

"आय सृजन के लिए सजावटी मछलियों के प्रबंधन" विषय पर तीन दिवसीय कौशल विकास कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. ए. जी. पोनियाह, भाकृअनुप-राष्ट्रीय मत्स्य अनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ और सीआईबीएबी के पूर्व निदेशक, डॉ. बी. बी. जाना द्वारा दिनांक 15-

17 मार्च, 2019 को किया गया। डॉ. अभिजीत मित्रा और डॉ. एम. के. दास इस कार्यक्रम के अतिथि के रूप में संस्थान में उपस्थित रहे। डॉ. अर्चना सिन्हा, प्रधान वैज्ञानिक और मुख्य सम्वयक, ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। भाकृअनुप-केन्द्रीय

"जीविकोपार्जन में अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की भूमिका" एक-दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 16 मार्च 2019 को भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता, द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला "जीविकोपार्जन में अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की भूमिका" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. अशोक कुमार सक्सेना, पूर्व महा-अध्यक्ष, भारतीय विज्ञान कांग्रेस और अन्य सम्मानित अतिथि डॉ. (श्रीमती) विजयालक्ष्मी सक्सेना द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. बसंत कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने स्वागत भाषण के साथ किया। डॉ. दास ने सभी उपस्थित लोगों को संस्थान की उपलब्धिया एवं क्रियाकलापों की जानकारी दी साथ ही साथ राजभाषा हिंदी में संस्थान द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बारे में बताया। उन्होंने सम्मानित अतिथियों को बताया कि इस कार्यशाला के लिए 60 से अधिक शोध पत्र प्राप्त हुए है जो अपने में एक रिकॉर्ड है। इन 60 शोध पत्रों को दो पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया गया है। मंच पर आसीन सम्मानित अतिथि डॉ. (श्रीमती) विजयालक्ष्मी सक्सेना, महा-अध्यक्ष (निर्वाचित), भारतीय विज्ञान कांग्रेस, कोलकाता, ने अपने संबोधन में संस्थान के निदेशक और अन्य अधिकारियो को हिंदी में इस बड़े स्तर पर कार्यशाला आयोजित करने के लिए भूरी- भूरी प्रशंसा की और

भविष्य में भी बड़े आयोजन की उम्मीद जताई। उन्होंने भारत के विभिन्न हिस्सों में मत्स्यपालको के जीवनयापन की स्थितिओ की चर्चा की और उम्मीद जताई की संस्थान के प्रयासों से मछुआरो की वर्तमान स्थिति में निश्चित रूप से सुधार होंगा। मुख्य अतिथि महोदया ने चीन एवं अन्य देशों का उदाहरण देते हुए भारतीय मछुआरों की जीवन पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने सुंदरवन क्षेत्र के मछुआरों की जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस क्षेत्र के मछुआरों को जंगली जानवरों से ज्यादा खतरा खतरनाक घड़ियाल से रहता है। मछुआरे किस तरह से अपनी पूंजी अर्जित कर सकता है, इस बारे में भी उन्होंने विस्तार से बताया। संस्थान द्वारा प्रकाशित हिंदी पुस्तकों

की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी भाषी क्षेत्र की अपेक्षा इस संस्थान में हिंदी पुस्तकें ज्यादा प्रकाशित की जाती है। मुख्य अतिथि डॉ. अशोक कुमार सक्सेना, पूर्व महा-अध्यक्ष, भारतीय विज्ञान कांग्रेस, कोलकाता ने अपने संबोधन में इस कार्यशाला के उद्देश्य विशेषकर मछली पालको की आय दुगुनी करने के प्रयास की प्रशंसा की और कहा की संस्थान द्वारा बड़ी मात्रा में चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों से मछली पालको में उधमिता विकास करने में सहायता मिलेगी। उन्होंने निदेशक से अनुरोध किया कि भारतीय

विज्ञान कांग्रेस के 28 चैप्टर्स के द्वारा आयोजित सेमिनारो में इस संस्थान को 2 घंटो का समय दिया जाएगा जिससे अधिक से अधिक किसान और मछली पालक लाभान्वित होंगे। इस मौके पर उन्होंने कहा कि मछुआरों को मत्स्य उत्पादन मूल्य अच्छा मिले इसके लिए मत्स्य उत्पादन में सुधार की आवश्यकता है। विशिष्ट अतिथि महोदय ने इस संस्थान की उपलब्धियों को देख कर संस्थान के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास की सराहना की। उन्होनें कहा कि निकट भविष्य में भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्थान द्वारा आयोजित कार्यशाला/प्रशिक्षण आदि में इस संस्थान के वैज्ञानिक/शोध छात्र-छात्राएं भी भाग ले ताकि अनुसंधान कार्यक्रम में और अधिक सुधार हो एवं अपना अनुभव एक दूसरे के साथ साझा कर सके। इस अवसर पर हिंदी में प्रकाशित दो पुस्तकों का विमोचन भी किया गया जिसके शीर्षक है : 1) मात्स्यिकी वर्धन में जलीय परिस्थितिथि का योगदान, और 2) सामाजिक उत्थान में अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की महत्ता।

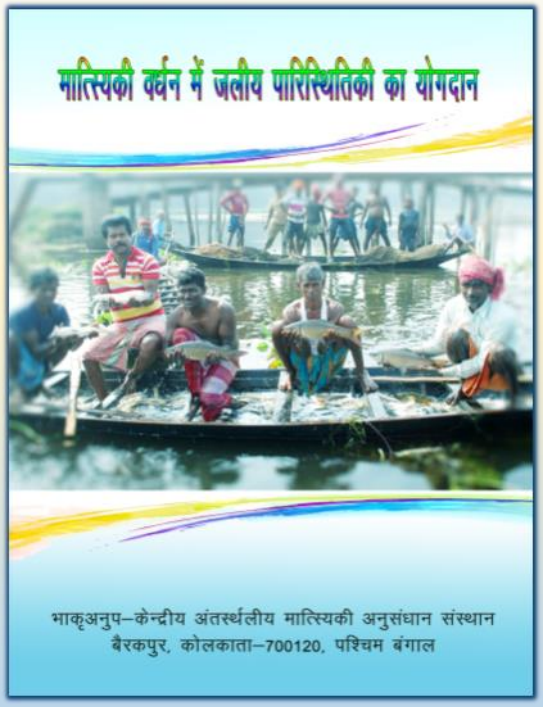

अंत में डॉ. श्रीकान्त सामन्ता, प्रधान वैज्ञानिक ने निदेशक महोदय, मुख्य अतिथियों को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर जिन दो शोध पुस्तकों का प्रकाशन किया गया उसके लिए श्री प्रवीण मौर्य, वैज्ञानिक एवं श्री एस. के. साहू, वैज्ञानिक ने काफी परिश्रम किया। इसके सम्पादन से लेकर प्रकाशन तक भरपूर कार्य किया। इसके लिए डॉ. श्रीकान्त सामन्ता ने उन्हें विशेष धन्यवाद दिया। इस कार्य में सहयोग देने के लिए श्रीमती सुमन कुमारी, मो. कासिम, सुश्री सुनीता प्रसाद एवं श्रीमती सुमेधा दास को भी धन्यवाद दिया। इस कार्यशाला में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने वाले समस्त कर्मियों को धन्यवाद दिया। साथ ही साथ सभी प्रतिभागियों का अभार व्यक्त किया। इसके समापन के साथ ही दो तकनीकी सत्रों को भी संस्थान के प्रेक्षाग्रह में प्रारंभ किया गया। इस कार्यशाला के दौरान बड़ी संख्या में शोध और लोकप्रिय लेखो को प्राप्त किया गया। इसलिए लेख प्रस्तुतीकरण के लिए दो तकनीकी सत्र बनाये गए। इस दोनों तकनीकी सत्रों में बड़ी संख्या में वैज्ञानिकों/शोध छात्र-छात्राएं एवं हितधारको ने अपने-अपने लेख प्रस्तुत किये। तकनीकी सत्रों के दौरान लेख प्रस्तुतीकरण का मूल्यांकन डॉ. विजयलक्ष्मी सक्सेना, डॉ. अशोक कुमार सक्सेना, डॉ बी. के. दास, डॉ यु. के. सरकार, डॉ बी. सी. झा, डॉ बी. पी. मोहंती, और डॉ. शैलेश द्वारा किया गया। इस अवसर पर पोस्टर प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर वैज्ञानिकों/शोध छात्र-छात्राएं ने कुल 23 पोस्टरों का प्रस्तुतीकरण किया। इन पोस्टरों का मूल्यांकन डॉ. एम. ए. हसन, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. अर्चना सिन्हा, प्रधान वैज्ञानिक एवं डॉ. एस. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा किया गया।

कार्यशाला में लेख प्रस्तुतीकरण एवं पोस्टर प्रस्तुतीकरण में उत्कृष्ठ प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को समापन समारोह में विशेष रूप से सम्मानित किया गया और अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास ने सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि इस वर्ष सितम्बर में भी इस तरह की एक कार्यशाला आयोजित करने का प्रस्ताव है। डॉ. बी. पी. मोहन्ति, प्रभागाध्यक्ष एवं डॉ. बी. सी. झा, पूर्व प्रभागाध्यक्ष ने भी कार्यशाला की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए अपने विचार प्रस्तुत किये। श्री एस. के. साहू, वैज्ञानिक ने सभी प्रतिभागियों का अभार व्यक्त किया। उन्होंने इस कार्यशाला के आयोजन में सहयोग देने के लिए श्री प्रवीण मौर्य, वैज्ञानिक, श्री गणेश चंद्रा, वैज्ञानिक, श्रीमती सुमन कुमारी, वैज्ञानिक, डॉ. रोहन कुमार रमण, वैज्ञानिक, श्री राजू बैठा, वैज्ञानिक श्रीमती अपर्णा राय, वैज्ञानिक, एवं अन्य को धन्यवाद दिया। इस अवसर प्रकाशित शोध पुस्तको के कवर डिजाइन करने के लिए श्री सुजित चौधरी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी को अनेक कार्यो के लिए विशेष धन्यवाद दिया गया। कार्यशाला इस धन्यवाद ज्ञापन के साथ संपन्न हुई।

मत्स्य समृद्धि मेला और संस्थान का 73 वां स्थापना दिवस

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 17 मार्च 2019 को मत्स्य समृद्धि मेले के आयोजन के साथ अपना 73 वाँ स्थापना दिवस भी मनाया। इस भव्य समारोह का उद्घाटन भारतीय प्रमुख कार्प के बीजों के 30000 अंगुलियों को माननीय अतिथियों डॉ. अशोक

कुमार सक्सेना, पूर्व महा-अध्यक्ष, भारतीय विज्ञान कांग्रेस डॉ. (श्रीमती) विजयालक्ष्मी सक्सेना भारतीय विज्ञान कांग्रेस की महासचिव (निर्वाचित), डॉ. एन. साहा, कुलपति, बर्दवान विश्वविद्यालय, श्री नवीन नायक, निदेशक, नेहरू युवा केंद्र, डॉ. सुब्रत मंडल, मुख्य प्रबंधक, नाबार्ड अन्य सम्मानित अतिथियों द्वारा गंगा नदी में बैरकपुर के घाट में संवर्धन किया गया। अपने स्वागत भाषण में, डॉ.बि.के.दास, संस्थान के निदेशक, ने सभी प्रगतिशील मछली किसानों, हितधारको, मत्स्य उद्योग कर्मियों, छात्रो, वैज्ञानिको आदि को बधाई दी, जो संस्थान की सफलता की कहानी की 72 वर्षों की यात्रा का हिस्सा रहे है। संस्थान के निदेशक ने दूसरी हरित क्रांति की दिशा में इस संस्थान की उपलब्धियों और निरंतर प्रयासों के बारे में भी सभी को जानकारी दी। भारतीय विज्ञान कांग्रेस की महासचिव (निर्वाचित) और समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. विजयलक्ष्मी सक्सेना ने अपने संबोधन में निदेशक महोदय और संस्थान के सभी कर्मचारियों को इस महत्वपूर्ण अवसर पर बधाई दी। उन्होंने जोर देकर कहा कि रैंचिंग के प्रयास गंगा नदी में मछली की विविधता में सुधार का मार्ग प्रशस्त करेंगे। डॉ. एन. साहा, कुलपति, बर्दवान विश्वविद्यालय और सम्मानीय अतिथि ने अपने संबोधन में संस्थान को 2500 से अधिक किसानों की भागीदारी के साथ, बड़े पैमाने पर मत्स्य समृद्धि मेले के आयोजन के लिए बधाई दी। भारतीय

विज्ञान कांग्रेस के पूर्व महासचिव और सम्मानीय अतिथि डॉ. अशोक कुमार सक्सेना ने अपने संबोधन में संस्थान को इतने बड़े पैमाने पर इस मेले के आयोजन और दूसरी हरित क्रांति के लिए किसानों में जागरूकता पैदा करने के लिए बधाई दी। डॉ. सुब्रत मंडल, मुख्य प्रबंधक, नाबार्ड, कोलकाता ने

अपने संबोधन में संस्थान की सराहना की और विभिन्न कार्यक्रमों के लिए राष्ट्रीयकृत बैंक कृषि और ग्रामीण विकास (नाबार्ड) का समर्थन जताया । श्री नवीन नायक, निदेशक, नेहरू युवा केंद्र, पश्चिम बंगाल और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह ने सभा को सूचित किया कि 2018-19 में संस्थान द्वारा 800 युवाओं को प्रशिक्षित किया गया है। उन्होंने कहा कि अगले साल नेहरू युवा केंद्र इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए 1000 युवाओं को भेजेगी। श्री बबलू मजूमदार, अवार्डी मच्छली किसान ने अपनी उपलब्धि के बारे में सभा को बताया। उन्होंने सभा को सूचित किया कि वर्तमान में कई मछुआरे उनके में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। अंत में एफआरईएम प्रभाग के प्रमुख डॉ. बी. पी. मोहंती ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। मत्स्य प्रदर्शनी का उद्घाटन सम्मानीय अतिथियों के समावेश में हुआ। इस अवसर पर कई प्रदर्शनी स्टाल लगाए गए जिसमे जीवित मछली की कहानी, सजावटी मछली इकाई, फ़ीड कंपनियों, मछली स्वास्थ्य इकाइयों आदि को शामिल किया गया है और मछली किसानों को इन उत्पादो से परिचय करवाया गया। मेले के एक भाग में किसान वैज्ञानिकों के संपर्क सत्र, उद्योग इंटरफ़ेस मीट, महिला मछुयारे सत्र आदि का भी आयोजन किया गया, जहाँ विभिन्न प्रगतिशील मछली किसानों ने अपनी उपलब्धि के बारे में बताया। 100 प्रगतिशील मछली किसानों, विभिन्न विश्वविद्यालयों के 300 छात्रों, 200 युवाओं, उद्यमियों, मछली व्यापारियों, मछली प्रोसेसर, एसएचजी, सजावटी मछली उत्पादकों और हैचरी मालिकों सहित लगभग 2000 किसानों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया है।

'अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव' पर एक कार्यशाला का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने अंतर्स्थलीय पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर प्रासंगिक डेटाबेस तैयार किया है। जलवायु परिवर्तन के खतरे को महसूस करते हुए अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन और जैव विविधता पर होने वाले विभिन्न प्रभावो जैसे जल प्रवाह में परिवर्तन, जल-विज्ञान में परिवर्तन, जलीय वनस्पतियों और जीवों के लिए ताप सम्बन्धी तनाव, विस्तारित सीमा और बाढ़ की बढ़ती घटना, निवास स्थान में गिरावट, प्रजनन और अंडे निषेचन में परिवर्तन आदि महत्वपूर्ण मुद्दों को आधार मानकर इस संस्थान ने 15 मार्च 2019 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला द्वारा तीन प्रमुख विषयगत मुद्दों को संबोधित किया गया। अंतर्स्थलीय खुले जल की मात्स्यिकी प्रबंधन पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव, जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में आद्रक्षेत्र मात्स्यिकी की कमजोरी का आकलन और अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के लिए जलवायु-लचीली अनुकूलन रणनीतियों या तकनीकों के विकास का विश्लेषण करना शामिल था । कार्यशाला में कार्य और ज्ञान के अनुभव को साझा करने के लिए दस प्रतिष्ठित वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला का उद्घाटन सत्र डॉ. ए. जी. पोनियाह, मुख्य अतिथि और पूर्व निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय खारा जलजीव अनुसंधान संस्थान, चेन्नई द्वारा किया गया था; डॉ. बी. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर; डॉ. एम. प्रभाकर, मुख्य अन्वेषक, एनआईसीआरए, भाकृअनुप-सीआरआईडीए, हैदराबाद; डॉ.(प्रो.) बी. बी. जाना, जूलॉजी के पूर्व-प्रोफेसर और आईसीईएस, कल्याणी विश्वविद्यालय; डॉ. एम. के. दास, पूर्व-प्रमुख, मत्स्य संसाधन और पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर; डॉ. यू.के. सरकार, परियोजना

सम्वयक, एनआईसीआरए, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और प्रमुख, जलाशय एवं आद्रक्षेत्र मात्स्यिकी प्रभाग; डॉ. संजीब बंद्योपाध्याय, आईएमडी, अलीपुर, कोलकाता; डॉ. वी. आर. सुरेश, प्रमुख, नदीय पारिस्थितिकी एवं मात्स्यिकी प्रभाग, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान; डॉ. बी.पी. मोहंती, प्रमुख, मात्स्यिकी संसाधन एवं पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग; डॉ. अभिजीत मित्रा, पूर्व प्रमुख, समुद्री विज्ञान विभाग, कोलकाता विश्वविद्यालय; डॉ. एस. आदिकारी, भाकृअनुप-केन्द्रीय मीठाजल जीवविज्ञान अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र कोलकाता, डॉ. (प्रो.) एस. के. दास, एक्वाक्योरचर विभाग, डब्ल्यूबीयूएएफएस; श्री लालू दास, बी. के. वी.; डॉ. यू.के. मंडल, भाकृअनुप- केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र कैनिंग और संस्थान के सभी वैज्ञानिक। शुरुआत में डॉ. बी.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने सभी विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया और मछली पालन और जलीय कृषि के क्षेत्र में वैज्ञानिको के उत्कृष्ट कार्यों और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। डॉ. यू.के. सरकार ने प्रतिभागियों से कार्यशाला के दौरान विचार-विमर्श में सक्रिय रूप से शामिल होने और इस उपलक्ष्य के लिए सिफारिशों के आदान प्रदान करने का भी आग्रह किया और अगली योजना में अनुसंधान के उभरते क्षेत्रों की पहचान करने का आग्रह भी किया। डॉ. ए. जी. पोनियाह ने कहा कि भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है। उन्होंने संस्थान की ऐसी उपलब्धियों के लिए निदेशक डॉ. बी. के. दास और डॉ. यू. के. सरकार की सराहना की। बैरकपुर स्थित हुगली नदी में भारतीय प्रमुख कार्प के बीजों का संवर्धन करने में उन्होंने खुशी भी जाहिर की।

जलवायु परिवर्तन अनुसंधान पर दो पुस्तकों का अनावरण

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संसथान, बैरकपुर ने 2004 में भाकृअनुप अनुसंधान परियोजना 'इंपैक्ट, एडाप्टेशन एंड वल्नेरेबिलिटी ऑफ इंडियन एग्रीकल्चर टू क्लाइमेट चेंज' के तहत जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर शोध शुरू किया और भाकृअनुप परियोजना 'नेशनल इनोवेशन ऑन क्लाइमेट रेजिलिएंट एग्रीकल्चर '(NICRA या निकरा)' के तहत जारी है। पिछले 11 वर्षों में यह संस्थान देश में अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी पर जलवायु परिवर्तन अनुसंधान पर मुख्य संगठन के रूप में उभरा है। संस्थान के कार्य का क्षेत्र देश के दस राज्यों में पूर्वी, मध्य और उत्तरी भागों में शामिल है। प्रमुख नदी घाटियों में जलवायु परिवर्तन से संबंधित अनुसंधान की प्रमात्रा, गोनाडल परिपक्वता पर बदलती जलवायु का प्रभाव, अन्तर्स्थलीय खुले पानी में प्रजनन और स्पॉन की उपलब्धता, प्रजातियों की तापीय सहिष्णुता का आंकलन, आर्द्रक्षेत्र की कार्बन अनुक्रम क्षमता और बेद्यता

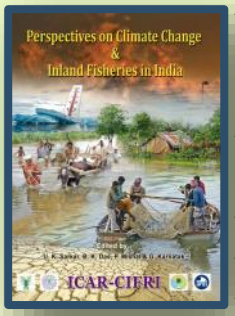

मूल्यांकन ढांचा आदि को चरण 1 (2012 -2017) में किया गया। महत्वपूर्ण आउटपुट, उपलब्धियों और परियोजना की सफलता को संश्लेषित करके एक पुस्तक "प्रेस्पेक्टिव ऑफ क्लाइमेट चेंज और इनलैंड फिशरीज इन इंडिया" जिसका संकलन एवं संपादन किया है – उत्तम सरकार, बसन्त कुमार दास, पी. मिशाल और गुंजन कर्नाटक और एक ई-पुस्तक हिंदी में जिसका शीर्षक है – "अन्तर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

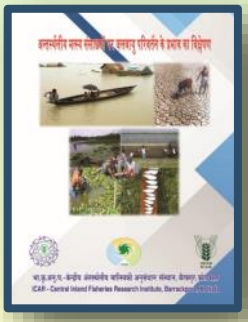

का विश्लेषण" जिसका संकलन एवं संपादन किया है – बसन्त कुमार दास, उत्तम सरकार, सुमन कुमारी, गुंजन कर्नाटक, और राजू बैठा, का विमोचन निकरा कार्यशाला के तहत डॉ. ए. जी. पोनियाह, पूर्व निदेशक, भाकृअनुप- केन्द्रीय खाराजल अनुसंधान संस्थान, चेन्नई और मुख्य अतिथि; डॉ. एम. प्रभाकर, मुख्य परियोजना संयोजक, निकरा परियोजना, भाकृअनुप-केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद; डॉ. (प्रो.) बी. बी. जाना, पूर्व-प्रोफ़ेसर (जूलॉजी) और अध्यक्ष, आई. सी. ई. एस. कल्याणी विश्वविद्यालय द्वारा किया गया था। इस प्रकाशन में अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी पर जलवायु परिवर्तन और संबंधित प्रभावों, नीति निर्माताओं, मछुआरों और शोधकर्ताओं के लिए जलवायु परिवर्तन के संबंध में हैचरियों में और नदियों में भारतीय प्रमुख कार्प के प्रजनन का आंकलन, ठंडे पानी की मछलियों के वितरण और प्रजनन का आंकलन, प्रजनन क्षमता और कार्प की तापीय सहिष्णुता का आंकलन, अनुकूली मछली प्रजातियों और मछली प्रजनन प्रथाओं का चयन, द्वीपीय नदियों में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का मूल्यांकन, चयनित जलीय कृषि केंद्रित आर्द्रभूमि में कार्बन अनुक्रमण विकल्पों का आंकलन, नदियों में महत्वपूर्ण प्रजातियों के निवास स्थान और प्रजनन व्यवहार का आंकलन, बारहमासी और प्रायद्वीपीय नदियों के परिभाषित हिस्सों में चयनित प्रजातियों और मछली संयोजन पैटर्न के प्रजनन जीव विज्ञान पर अध्ययन, चयनित नदी के फैलाव में मछली विविधता के लिए जलवायु से संबंधित प्रवाह परिवर्तनों का प्रभाव, इसके शमन और अनुकूलन रणनीतियों पर उपयोगी जानकारी शामिल है।

अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बी. के. दास ने सामाजिक विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम के लाभ पर प्रकाश डाला। यह प्रशिक्षण राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड, हैदराबाद द्वारा 50 किसानों के लिए प्रायोजित किया था जिनमे 23 महिलाएं शामिल थीं जो पश्चिम बंगाल और उड़ीसा के विभिन्न हिस्सों से आए थे जैसे हावड़ा, बालागढ़, बुजबुज, बेलगोरिया, बैरकपुर और उड़ीसा के बारीपदा से। प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण अंतर्स्थलीय सजावटी मछलियों के प्रकार,

उनके प्रबंधन, प्रजनन, बीज उत्पादन, मछलीघर का निर्माण और आय सृजन के लिए सजावट शामिल है। विपणन की मांग को जानने के लिए गैलिफ स्ट्रीट सजावटी मछली बाजार का भ्रमण भी शामिल किया गया था । कार्यक्रम का समन्वय डॉ. अर्चना सिन्हा, डॉ. ए.के.साहू और श्री हिमांशु एस. स्वैन ने किया था।

गंगा नदी मे जैव विविधता के संरक्षण के लिए नमामि गंगे के तहत एक पहल

गंगा की जैव विविधता खतरे के दौर से गुजर रही है पारिणाम स्वरूप गंगा नदी की देशी मछलियां विलुप्त होने के कगार पर पहुँच चुकी हैं। गंगा नदी अपने अस्तित्व के एक खतरनाक मोड़ से होकर गुजर रही है जिससे हजारो मछुआरो की जीविका और मानव सभ्यता के अस्तित्व पर सवाल खड़ा हो गया है। इस विषय को ध्यान में रखकर गंगा की जैव विविधता के संरक्षण और पुनर्जीवन के लिए नमामि गंगे परियोजना के तहत इस तरह की समस्याओं के समाधान के लिए एक बहुआयामी पहल की शुरुआत की गयी है। केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिको ने उन्नत प्रजातियों के कतला, रोहु और नैन के बीजों का उत्पादन किया और उनको गंगा नदी के अलग अलग

भागों मे संवर्धन किया । जो इस कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था और इससे विलुप्त हो रही देशी प्रजातियों की मछलियों को पुनः मूलस्थिति मे लाने मे सफलता हासिल हो सकती है । इसके अलावा गंगा के पारिस्थितिकी तंत्र को स्वस्थ और बेहतर बनाये रखने के लिए सभी जल जीव जंतुओं को बेहतर तरीके से विकसित करने के लिए उचित पर्यावरण उपलभ्ध हो सके इसके लिए सभी संस्थाओ को एक साथ जुड़ना होंगा ताकि गंगा मे हो रहे प्रदूषण, फैक्टरियों और घरेलू गंदे पानी को गंगा नदी मे प्रवाहित करने से रोका जा सके । गंगा

नदी मे बने बैराज से समुचित मात्रा मे पानी भी अविरल छोड़ा जाना चाहिए । इसी बात को ध्यान में रखते हुए दिनांक 29 मार्च 2019 को इस संस्थान ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली से आई हुई वरिष्ठ वैज्ञानिको की एक टीम जिसके अध्यक्ष डॉ. सी.

वासुदेवप्पा, डॉ. एस. सी. पाठक, डॉ. उषा मोझा, और डॉ. वी. आर. चित्रांशी के समक्ष गंभीरता से रखा गया । गहन विचार विमर्श के उपरांत टीम के सदस्यों ने दिनांक 30 मार्च 2019 को संगम स्थल में जाकर इस संस्थान के सभी वैज्ञानिकों के साथ 20000 उन्नत

बीजों की मछलियों को गंगा नदी मे प्रवाहित किया । इस अवसर पर इस संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र इलाहबाद के विभागाध्यक्ष डॉ॰ रमा शंकर श्रीवास्तव ने टीम के चेयरमेन व सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए यह बताया कि इस तरीके से 19 संवर्धन कार्यक्रम ऋषिकेश से लेकर कोलकाता तक किए जा चुके हैं और इस पूरे वर्ष मे एक करोड़ उन्नत बीजो को गंगा नदी मे प्रवाहित किया जाएगा और इसके साथ ही साथ गंगा के प्रदूषण पर नियंत्रण व गंगा की धारा को अविरल बनाने मे नीतिगत एजेन्सी के साथ मिलकर काम किये जाने का भी विचार है । डॉ. सी॰ वासुदेवप्पा ने गंगा को जीवंत रखने के लिए जल के प्रवाह की अविरलता पर खासा ज़ोर दिया और सुझाव दिया कि सरकार बैराजो द्वारा बाधित पानी की अविरलता को सुनिश्चित करे । इस अवसर पर संस्थान के सभी वैज्ञानिक, शोध विध्यार्थी और समस्त क्रमचारियों ने रैंचिंग कार्यक्रम मे भाग लिया ।

ओडिशा के जनजातीय युवाओं को अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन में प्रशिक्षित किया गया

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने ओडिशा के सुंदरगढ़, बरगढ़ और संबलपुर जिलों के 100 आदिवासी युवाओं के लिए 23-24 मार्च 2019 तक "आजीविका विकल्प के रूप

में मत्स्य पालन" पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने मत्स्य पालन क्षेत्र के अवसरों (सरकारी क्षेत्रों, निजी क्षेत्रों और उद्यमिता में अवसरों) के बारे में इन युवाओं को जागरूक किया। इन जिलों के आदिवासी युवाओं को राज्य मुख्यालय भुवनेश्वर ने "भारत स्काउट्स एंड गाइड" के तहत एक महीने के प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रतिभागी बनाया हुआ है। आजीविका विकल्प के रूप में इन युवाओं को मत्स्य पालन क्षेत्र में जागरूकता के लिए मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं से परिचित भी होना आवश्यक है। डॉ. दास ने उन्हें संसाधनों की उपलब्धता के अनुसार विभिन्न प्रकार की मछली पालन प्रथाओं के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने आर्द्रभूमि और जलाशयों में मछली उत्पादन के लिए उपलब्ध विभिन्न प्रकार की प्रौद्योगिकी (पिंजरा पालन और पेन पालन) को भी साझा किया। सवाल जवाब सत्र में मछली पालन और मछली पालन के अवसरों के बारे में आदिवासी युवाओं के प्रश्नो के उत्तर भी दिए गए । प्रशिक्षण के दूसरे

दिन युवाओं को सजावटी मछली पालन पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। युवाओं ने प्रशिक्षण के दौरान आपने हाथों से मछलीघर (एक्वैरियम) तैयार किया। एक्वैरियम बनाने के लिए आवश्यक विभिन्न जलीय पौधों और अन्य सामानों पर भी उनके साथ विस्तार से चर्चा की गई। प्रशिक्षण

को एक मछलीघर उद्योग मेसर्स एम.आर.एक्वेटिक्स और रोटरी रॉयल जैसे स्वयंसेवी संगठनों के साथ जोड़ा गया था, जो इस प्रशिक्षण

कार्यक्रम में शामिल थे। पूर्व मुख्य सचिव बिजय पटनाइक जैसे अन्य

गणमान्य व्यक्तियों के अलावा; श्री कालीप्रसाद मिश्र, चीफ कमिश्नर, ओडिशा राज्य भारत स्काउट और गाइड; डॉ. अरुण कुमार नायक, स्टेट कमिश्नर, भारत स्टेट स्काउट्स एंड गाइड्स और भुवनेश्वर गुड्स ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री निर्जन प्रराज ने भी प्रशिक्षण में

भाग लेने वालों को अपने बहुमूल्य सुझाव प्रदान किए ।

उत्तर 24 परगना के गोपालनगर के बेलेडांगा आर्द्रभूमि के जनजातीय मछुआरों के लिए जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

भाकृअनुप- केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने अनुसूचित जाति उपयोजना (एससीएसपी) के तहत गोपालनगर, उत्तर 24 परगना के बेलेडांगा आर्द्रभूमि पर एक बड़े पैमाने पर

जागरूकता अभियान चलाया। मत्स्य सहकारी समिति में आर्द्रभूमि के तीन निकटवर्ती गांवों के 178 सदस्य हैं। इसलिए, वैज्ञानिक और सामरिक हस्तक्षेप पर आद्रभूमि के मछुआरों को संवेदनशील बनाने की आवश्यकता को महसूस करते हुए, संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के.दास ने पहल करते हुए मछुआरों के लिए एक बड़े पैमाने पर जागरूकता अभियान की व्यवस्था की। कार्यक्रम में अध्यक्ष, सचिव और बोर्ड के सदस्यों के साथ लगभग 60 मछुआरों ने भाग लिया। कार्यक्रम मछुआरों के साथ एक केंद्रित समूह चर्चा सत्र के साथ शुरू हुआ जो उनकी मौजूदा स्थिति, समस्याओं के संभावित क्षेत्रों को समझने के लिए था । संस्थान के निदेशक महोदय ने अपने संबोधन में संसाधन प्रबंधन दक्षता बढ़ाने के लिए मत्स्य पालन विकास के लिए कुशल प्रबंधन प्रथाओं और सामूहिक दृष्टिकोणों के माध्यम से

छोटी स्वदेशी मछली प्रजातियों के संरक्षण के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने संस्थान से तकनीकी सहायता के साथ पेन पालन जैसी उन्नत तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया ताकि वे अपने संसाधन उपयोग दक्षता को बढ़ा सकें और आर्द्रभूमि से मछली उत्पादन की

गुणवत्ता और मात्रा बढ़ा सकें। उन्होंने बेहतर मत्स्य प्रबंधन के लिए अपने ज्ञान और कौशल को बढ़ाने के लिए मछुआरों को संस्थान में क्षमता निर्माण प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। निदेशक ने उत्साहपूर्वक मछुआरों के साथ एक विचार विमर्श सत्र की व्यवस्था की, जहां उन्होंने संस्थान के अन्य वैज्ञानिकों के साथ-साथ मछुआरों के प्रश्नों को व्यक्तिगत रूप से स्पष्ट किया। मछुआरों को संस्थान के माध्यम से बेहतर प्रौद्योगिकी और प्रबंधन प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। डॉ. पी. के. परिदा, समन्वयक, एससीएसपी, डॉ. पी. देबरॉय, वैज्ञानिक और सुश्री एस. सोम, वैज्ञानिक ने कार्यक्रम को संचालित किया।

महत्वपूर्ण बैठकें

- संस्थान ने अनुसूचित जाति उप-योजना के अंतर्गत दिनांक 25 फरवरी, 2019 को गोबरडांगा, उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल में पाथेर साथी कृषक समिति (गोबरडांगा सेवा कृषक समिति) के साथ संयुक्त रूप से वैज्ञानिक-किसान संपर्क बैठक का आयोजन किया गया।

- संस्थान के जीआई पिंजरे में संचयित लैबियो बाटा मछलियों को दिनांक 28 फरवरी, 2019 को असम के नागांव जिले के सामगुरी बील में जन जागरूकता कार्यक्रम (फील्ड-डे) के दौरान छोड़ा गया।

- संस्थान के मुख्यालय में पश्चिम बंगाल के जगतबल्लवपुर में स्थित सोवरानी मेमोरियल कॉलेज के अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर एक दिवसीय उन्मुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 1 मार्च, 2019 को आयोजित किया गया था।

- संस्थान के मुख्यालय में दिनांक 4-6 मार्च 2019 के दौरान सुंदरबन, पश्चिम बंगाल के 50 मछुआरों के लिए" मछुआरों की आय उपार्जन करने के लिए नहर क्षेत्र में मछली पालन का विकास" पर एनएफडीबी प्रायोजित तीन दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस प्रशिक्षण में 50 मछुआरों ने भाग लिया।

- संस्थान ने असम के बोरूड़ा अकादमी डिग्री कॉलेज के अंतिम वर्ष के छात्रों के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर एक दिवसीय उन्मुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 10 मार्च, 2019 को आयोजित किया।

- संस्थान ने दिनांक 10-12 मार्च 2019 के दौरान सुंदरबन, पश्चिम बंगाल के 50 मछुआरों के लिए" मछुआरों की आय उपार्जन करने के लिए छोटी देशी मछली पालन" पर एनएफडीबी प्रायोजित तीन दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस प्रशिक्षण में 50 मछुआरों ने भाग लिया।

- संस्थान मुख्यालय में दिनांक 15-17 मार्च 2019 के दौरान पश्चिम बंगाल और ओडिशा के 50 मछुआरों के लिए "मछुआरों के आय उपार्जन करने के लिए अलंकारी मछली पालन" पर एनएफडीबी प्रायोजित तीन दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया

- संस्थान के मुख्यालय में 'संस्थान अनुसंधान परिषद' की बैठक 18-20 मार्च, 2019 के दौरान आयोजित की गई।

- संस्थान ने 22 मार्च, 2019 को जालेश्वर, बालासोर, ओडिशा में अनुसूचित जाति उप-योजना गतिविधियों के लिए किसानों के साथ एक बैठक आयोजित की जिसमें परस्पर विचारों का आदान-प्रदान किया गया।

नयी बहाली (स्टेनोग्राफर)

सुश्री सोहिनी चैटर्जी, की तैनाती 16 मार्च 2019, को स्टेनोग्राफर के पद पर भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में हुई है। सुश्री चैटर्जी जीव विज्ञान में स्नातक हैं और अंग्रेजी स्टैनोग्राफी (100 शब्द प्रति मिनट) एवं कंप्यूटर टाइपिंग (40 शब्द प्रति मिनट) में पारंगत हैं।

सम्पादक मंडल की तरफ से

इस अंक की प्रस्तुति के साथ ही हमारा इस माह का एक ओर लक्ष्य पूर्ण हो गया है। इस मासिक पत्रिका के माध्यम से संस्थान में हो रहे विभिन्न कार्यो और भावी योजनायों की कुछ झलकियों को चित्रों और सम्पदाकियें द्वारा दर्शानें का प्रयास किया गया है। दो महत्वपूर्ण कार्यशालाओं के अलावा मत्स्य मेला और महिला दिवस का आयोजन इस संस्थान के विभिन्न आयामों को दिखाता है। समय-समय पर उच्च संस्थानों के अधिकारीयों और मुख्य धारा से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े कृषकों के साथ साथ वित्तीय कठिनाईयों से जूझ रहे सीमान्त किसानों के लिए संस्थान के प्रयास अब फलदायी सिद्ध हो रहे है। संस्थान के वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मचारी अपनें कार्यो और लक्ष्यों के निर्धारण में हमेशा एकजुट होकर कार्य कर रहे है। इन्ही कार्यो और लक्ष्यों को पूर्ण करने के प्रयासों के विभिन्न चरणों को सूचीबद्ध करके हम इस मासिक पत्रिका द्वारा आप तक पहुंचाते रहते है। जिसके फलस्वरूप हमें आप का मार्गदर्शन मिलता रहता है। आज के समय की माँग को देखते हुए वैज्ञानिक शोध कार्यो को सही रूप से पहुँचाने, कृषको के हित में जारी सरकारी नीतियों के क्रिआन्वयन में आ रही बाधायों को समाप्त करने और सामाज में उत्पन्न अशिक्षा की खाई को मिटाने के लिए हम इस मासिक समाचार पत्रिका की भूमिका को बहुत अहम् मानते है।

प्रकाशन मंडल
प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,
संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, राजीव लाल, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास
संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कासिम फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी
भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत
दूरभाष: +91-33-25921190/91 फैक्स: +91-33-25920388 ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in
ISSN0970-616X
सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है